सलोनी रश्मि
(स्वरचित कविता संग्रह)
डॉ हिमांशु शेखर

सलोनी रश्मि

डॉ हिमांशु शेखर

वरिष्ठ वैज्ञानिक

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

महानिदेशालय, पाषाण, पुणे 411021

मोबाईल 9422004678

डॉ हिमांशु शेखर की पुस्तक 'सलोनी रश्मि'

प्रथम संस्करण : 2021

(c) : डॉ हिमांशु शेखर

बंगला सं. 11, नेकलेस एरिया, आर्मामेंट कालोनी, पाषाण, पुणे -21

दूरभाष: 020-29514678 मोबाइल: 09422004678

ई-मेल : himanshudrdo@rediffmail.com

शब्द संयोजन, टंकण, मुद्रण, प्रकाशन : डॉ हिमांशु शेखर

Saloni Rashmi

A book of self written poetry by Dr Himanshu Shekhar

प्रस्तावना

सलोनी रश्मि का अर्थ है लावण्ययुक्त किरणें| पर इस अर्थ से ज्यादा, यह तथ्य द्रष्टव्य है कि सलोनी मेरी प्रिय बहन का नाम है और रश्मि मेरी पत्नी का नाम है| इस वर्ष “दुर्गा स्तुति” नाम से प्रकाशित पुस्तक में मां दुर्गा की अराधना प्रस्तुत की गई थी| इस के अलावा भी भक्ति, पर्व, त्यौहार और जयन्ती के कई अवसर होते है, जिनपर कुछ उदगार कविता के माध्यम से प्रस्तुत हुए| भारत में वर्ष भर पर्व त्यौहार, जयन्ती आदि मनाने का प्रावधान है| इस पुस्तक में इन्हीं अवसरों के लिए कुछ लयबद्ध छंद प्रस्तुत है|

मेरी इन स्वरचित कविताओं में भक्ति है, पर्वों का औचित्य है, मनाने की विधियां है, महापुरुषों की गाथाएं है| वर्ष भर (2020-21) में होने वाले आनंद के क्षणों को 62 कविताओं के द्वारा समेटा गया है| पाठक अगर कविता से जुड़ पाएंगे, तो कविता का आनंद ले पाएंगे| आशा है सकारात्मक आलोचना कर पाठक इसे अपना स्नेह देगे। धन्यवाद |

दिनांक : 20.07.2021 डॉ हिमांशु शेखर

स्थान : पुणे

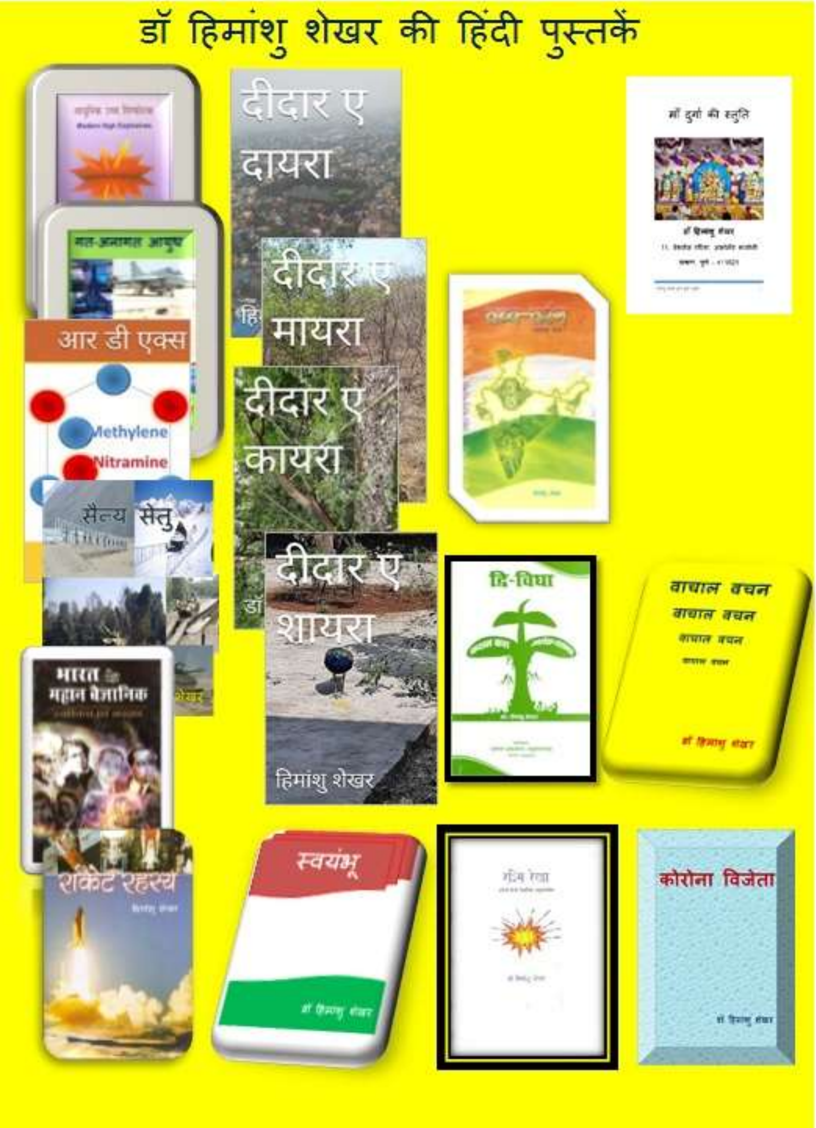
डॉ हिमांशु शेखर की हिंदी पुस्तकें
दीदार ए दायरा
दीदार ए मायरा
दीदार ए कायरा
दीदार ए शायरा
हिमांशु शेखर
माँ दुर्गा की स्तुति
आर डी एक्स
Methylene
Nitramine
सैन्य सेतु
द्वि-विधा
वाचाल वचन
भारत के महान वैज्ञानिक
राकेट रहस्य
स्वयंभू
कोरोना विजेता

- समर्पण -

बहन सलोनी

और

पत्नी रश्मि

को सस्नेह समर्पित

- डॉ हिमांशु शेखर

कविता क्रम

1. *त्योहार विवरण 11*
2. *पर्व वर्णन 14*
3. *जयन्ती उत्सव 18*
4. *विश्व हिंदी दिवस 20*
5. *मकर संक्रांति 21*
6. *चौदह जनवरी 24*
7. *गुरू गोविंद सिंह जयन्ती 25*
8. *झंडा और डंडा 27*
9. *गणतंत्र में भाषण 29*
10. *भारत है गणतंत्र 31*
11. *गणतंत्र दिवस 33*
12. *शहीद दिवस 35*
13. *कालाष्टमी 37*
14. *षटतिला एकादशी 38*
15. *मौनी अमावस्या 39*
16. *मां सरस्वती वर दे 41*
17. *सरस्वती पूजन 44*
18. *सीता अष्टमी 46*

19. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 48

20. विश्व कविता दिवस.. 53

21. हनुमान जयंती 54

22. देव वंदन चालिसा 56

23. परशुराम अराधना 60

24. रक्षाबंधन 62

25. श्री राम से बेरा पार हुआ.. 65

26. स्वतंत्रता दिवस पे सब सो गए.. 73

27. आजादी का मतलब क्या है?.. 76

28. हम भारत से आएं हैं.. 81

29. गणपति वंदन 82

30. विनायक वंदना.. 84

31. बप्पा के पकवान प्रसार.. 86

32. जय गणेश.. 88

33. हे गणपति !मोदक पान करो.. 90

34. ओनम पर्व 93

35. मिच्छामि दुक्कडम.. 95

36. जय गणनायक, रक्षणकर्ता.. 97

37. रावण का दशहरा 98

38. आप लिखेंगे.. 100

39. गोवर्धन पूजन 101
40. भारत में सरदार 103
41. एकता दिवस 105
42. करवा चौथ 107
43. त्योहारों का मौसम 109
44. दीवाली नेपथ्य से 112
45. धनतेरस 113
46. सफाई पर्व 115
47. धनवंतरी पूजन 116
48. गुड्डू की शंका 119
49. छोटी दीवाली 121
50. दिपावली उत्पत्ति 122
51. दिवाली अभिलाषा 124
52. दीवाली :कल बनाम आज 126
53. भाईदूज 128
54. यम द्वितीय 130
55. चित्रगुप्त पूजन 131
56. भोरिया अर्क 132
57. ठेकुआ की मांग 134
58. छठ मइया की जयकार 136

59. *छठ पर्व* *138*

60. *देवोत्थान* *140*

61. *संविधान दिवस* *141*

62. *देव दीवाली* *143*

1. त्योहार विवरण

हम भारत के कर्णधार,
बहुत मनाते हैं त्योहार,
हर हफ्ते में एक मनेगा,
हफ्ता घटता है हर बार।

वायु मिट्टी या कि पहाड़,
जल अग्नि भी हैं तैयार,
सूरज, चंदा पे त्योहार,
एक नहीं ये दो या चार।

रौशन होगा अब हर द्वार,
दीवाली भी रही पुकार,

दहन होलिका, रावण का
लोहड़ी में अलाव निहार।

जन्में धरती पे कई होनहार,
महापुरुषों का कर सत्कार,
जन्म दिवस मनता भारत में,
देवों के भी है कई अवतार।

साल में आएंगे एक बार,
निश्चित दिन पूजा ले हार,
स्थापित मूर्ति करते हैं,
और विसर्जन भी त्योहार।

हिन्दी का भी है त्योहार,

और सफाई की ललकार,
जो कहते, करते सारे को,
मना रहे सब यही बयार।

शादी, बरसी हुए शुमार,
छट्ठी की भी चली बहार,
भाई, पति, बेटा आदि सा
हर रिश्ता है अब त्योहार।

जग का सबकुछ रहा निहार,
बचा नहीं, जो ना त्योहार,
अब ऐसा करना है खोजो,
कहो कि ना है जो त्योहार।

2. पर्व वर्णन

भारत में देवी देवता को मानते हैं,
अराधना उन सबों की जानते हैं,
उन सबों की प्रार्थना पहचानते है,
दिन नियत कर स्तुति को ठानते है।

चौदह जनवरी सूर्य का है, मानते हैं,
शुभ का हो आगाज, ऐसा मानते हैं,
महाशिवरात्रि को अर्ध्य है, मानते हैं,
शिव के पूजन की विधि को तानते हैं।

विद्‌या की देवी सरस्वती की ठानते हैं,
बसंत पंचमी को नमन कर छानते है,

विश्वकर्मा को दिया दिन जानते हैं,
कारखानों में ये दिन सब मानते हैं।

रामनवमी राम का दिन मानते हैं,
जन्मदिन उनका है ऐसा मानते हैं,
मारूति का जन्म है ये जानते हैं,
एक दिन उनकी हो पूजा, मानते हैं।

कृष्ण के होलिका वध को जानते है,
और सब होली मनाकर ठानते है,
कृष्णाष्टमी को जन्मदिन पहचानते हैं,
दही हाण्डी और पूजन ठानते हैं।

गणपति, विघ्नेश कृपा को जानते हैं,

दस दिनों तक उनका पूजन ठानते है,
बप्पा का स्वागत हो अनुपम मानते हैं,
अश्रुपूरित नेत्र, लेकर विदाई तानते हैं।

चांद के पूजन के दिन भी जानते हैं,
चौक चंदा को फल समर्पन ठानते हैं,
पर्व करवा चौथ में, शशि जानते है,
कोइजागरा अमृत बरसना मानते हैं।

नवरात्रि में दुर्गा का पूजन ठानते हैं,
देवी के नौ नौ रूप तब पहचानते हैं,
और दशहरा को सब ये मानते हैं,
राम ने रावण को मारा, जानते हैं।

आ गई दिवाली अब, ये मानते हैं,
काली पूजा करेंगें, ये मानते हैं,
गणेश-लक्ष्मी नमन को ठानते है,
शुभ लाभ होगा, छत्र ऐसा तानते हैं।

यमराज की यमुना बहन, जानते हैं,
भातृ द्‌वितीया नाम देना, ठानते हैं,
चित्रगुप्त पूजन करें ये मानते हैं,
पर्व में इसको भी उत्तम मानते हैं।

छठ में सूरज का पूजन मानते हैं,
ऊषा-प्रत्युषा को देवी मानते हैं,
अर्ध्य उनको दे रहे, शुभ जानते है,
और इच्छित फल मिले, मानते हैं।

देव पूजन, वर्ष भर कर, तानते हैं,
पर्व की महिमा को भी पहचानते हैं,
प्रकृति और ईश को हम मानते हैं,
पर्वों का है देश भारत, मानते हैं।

3. जयन्ती उत्सव

भारत, जयन्ती प्रेमी है, सब जानते है,
दो चार दिन हर माह में सब मानते हैं,
जन्मदिन से श्राद्ध तक सब छानते हैं,
इसलिए पर्वों का परचम तानते हैं।

महापुरुषों को हम अपने मानते है,

जन्मदिन हरेक का हम जानते हैं,
गांधी, नेहरू, शास्त्री, की तानते हैं,
अंबेदकर, पटेल को भी मानते हैं।

साहित्य के जितने पुरोधा जानते हैं,
सूर, तुलसी, बिहारी को मानते हैं,
रसखान, रहिम कवि की तानते हैं,
इनकी रचनाओं में दुनिया मानते हैं।

आधुनिक साहित्य सेवी जानते हैं,
प्रेमचन्द, और पंत, दिनकर मानते हैं,
प्रसाद, रेणु और निराला छानते हैं,
जयन्ती उन सबकी हम तो मानते हैं।

आज भारत में जयन्ती ठानते हैं,

सीख उन सबकी नहीं ही मानते हैं,

कहे शेखर जयन्ती जब छानते हैं,

एक दिन भी, ना समझना जानते हैं।

4. विश्व हिंदी दिवस

10.01.2021

विश्व हिंदी दिवस का, हो गया आगाज है ,

आज दस जनवरी है, जिस दिन पर हमको नाज़ है ,

विश्व में प्रचार कर, उड़ान से अरबाज है ,

आशा यही लेकर चलें, हिन्दी बने सरताज है ।।

आज सारे विश्व में, हिंदी का यह अंदाज है ,

राष्ट्र के अध्यक्ष-अभिवादन में इसका राज है ,
और दूतावासों की, घोषित बुलंद आवाज है ,
संयुक्त राष्ट्रसंघ की, भाषा बने यह काज है ।।

शेखर कहे हिंदी को, वैश्विक पटल देना आज है ,
प्रज्ञ, विज्ञों से गुजारिश, समय ये बस आज है ,
लेखनी की चाल से, हिन्दी की सेवा आज है ,
और परचम लेकर निकले, भाषा यही सरताज है।।

5. मकर संक्रांति

14.01.2021

जब सूर्य चले हैं उत्तरायण,

तो अर्घ्य सुशोभित वातायन,

है शुरू देव दिन आज सुनो,

कहते इसको ही देवायन।

जल, फूल लाल करते अर्पण,

गुड़, गेहूँ, वस्त्र, अक्षत, चंदन,

है खिचड़ी दान का भी विधान,

इस पर्व में वर्ष का है दर्पण।

खरमास अंत इस दिन मानो,

शुभ कार्य रूके सब पहचानो,

मंगल सब का प्रारम्भ करेंगे,

दिन वर्ष का पहला शुभ जानो।

पतंग उड़ा कर दो मिसाल,
स्नान फिर पूजन हो सकाल,
हो दान दक्षिणा, ना सवाल,
ये दिन उत्तम, कर लें ख्याल।

ये मकर संक्रांति का त्योहार,
इसमें प्रकृति पूजन का सार,
गुड़, तिल, रेवड़ी, गजक, लिए,
ये पर्व दे खुशियों के विचार।

इस पर्व के संग कई और आए,
शुभकामनाएं शेखर की आए,
पोंगल, बिहू, लोहरी, विल्लाकू,
सुख, शान्ति, खुशी दिल में आए।

डॉ हिमांशु शेखर की सलोनी रश्मि

6. चौदह जनवरी

14.01.2021

चौदह जनवरी खरमास का अंत,
प्रारम्भ हो मंगलमय, दिग दिगंत,
हर साल का शुभ, पहला पर्व यही,
सब ओर पतंगबाजी अनंत।

मकर संक्रांति के संग आया उत्तरायण,
बिहु, पोंगल, लोहरी, विल्लाकू गायन,
एक ही दिन, पर्व सारे मनाए खुश हुए,
एकता संदेश देता, कहेंगे भारत रसायन।

पर्व सारी फसल वाले, आ गए हैं साथ में,

धरा से उपजे सूकून, आज जन के माथ में,
अग्नि का प्रज्वलन कर, स्तुति ये खास है,
नृत्य करते है सभी, हाथों को डाले हाथ में।

उत्तरायण हुए सूरज, इसका भी संज्ञान है,
मकर संक्रांति मनाना, है यही तो भान है,
तिल, गुड़, चूड़ा, दही, से बनी पहचान है,
मीठा खाओ, मीठा बोलो, मंत्र ये महान है।

7. गुरू गोविंद सिंह जयन्ती

20.01.2021

सिखों की बढ़ती जाती शान ,
गुरु गोविंद सिंह का बलिदान ,

प्रेरित सिखों का खानदान ,

तभी तो वह होते हैं महान ।

नानकशाही पंचांग निदान ,

बीस इक्कीस का जन्म विधान ,

जनवरी बीस को रखो ध्यान ,

गुरु की आज जयंती मान ।

सिखों के दसवें गुरु की आन ,

नौ वर्ष की आयु से सम्मान ,

योद्धा, कवि दोनों सी पहचान ,

दार्शनिकों में उनका जयगान ।

खालसा पंथ को दे अभियान ,

हलाल, तंबाकू से व्यवधान ,
संबंध अनैतिक से अज्ञान ,
बाल न काटें, चार अरमान ।

गुरु की सीखों का संज्ञान ,
उनका प्रेरक था बलिदान ,
नमन करे जग ले संज्ञान ,
गुरु गोविंद सिंह का जय गान ।

8. झंडा और डंडा

26.01.2021

भारत में झंडा फहराया ,
उसकी है जिसने फहराया ,

अपना झंडा खोज रहे सब
बंटा देश, झंडे की माया ।

बंटा देश ये, उभर के आया ,
सब ने अपना देश बसाया ,
और आज गणतंत्र दिवस पर
सब अपने झंडे ले आया ।

हर झंडे में डंडे लाया ,
उस डंडे की ऐसी माया ,
मूलभूत गुण ऐसा होता
मारपीट का स्वांग रचाया ।

और तिरंगे को समझाया

लिपटो जब मृत होती काया ,

डंडा से हिंसा ही होती है,

झंडा ढकता, यही सुहाया ।

झंडा डंडा साथ ना आया ,

डंडा पहले दौड़ा आया ,

शेखर का गणतंत्र पे कहना

संग रहे हम, नहीं सुहाया ।

9. गणतंत्र में भाषण

26.01.2021

गणतंत्र पर्व में भाषण आया ,

भाषण का ही शासन आया ,

भाषण में गणतंत्र को खोजें
नहीं इसी का राशन आया ।

संविधान का जिक्र ना आया ,
सेनानी का जिक्र ना आया ,
भाषण ऐसा बना लिया कि
देश का कोई जिक्र ना आया ।

भाषण में संदेश ना आया ,
गौरवशाली देश ना आया ,
आज तिरंगे को वंदन करते
हैं ऐसा वेश ना आया ।

सब ने खुद को महान बताया ,

ज्ञानवान, धनवान बताया ,

शेखर इस गणतंत्र पर्व में

गणतंत्र की ना पहचान बताया ।

10. भारत है गणतंत्र

26.01.2021

संविधान इस दिन ही आया ,

गणतंत्र बना था देश बताया ,

झंडे और पताके लाया ,

रंग बिरंगा इसे बनाया ।

दिन आज है शुभ बतलाया ,

हर भारत वासी हर्षाया ,

झंडा वंदन सबको भाया ,
सब ने इस को खूब निभाया ।

राष्ट्रीय स्तर पर मनाया ,
राष्ट्रगान सबने मिल गाया ,
और तिरंगे को फहराया ,
देश प्रेम की ज्योत जगाया।

बच्चों में उत्साह ये आया ,
मिली मिठाई खुशियां लाया ,
झंडा फहराकर ये बतलाया ,
भारत है गणतंत्र बताया ।

11. गणतंत्र दिवस

26.01.2021

गणतंत्र दिवस का पर्व हमें, ये समझाने आया है,
गणतंत्र हुए, स्वतंत्र हुए, ये याद दिलाने आया है।
संविधान है श्रेष्ठ ग्रंथ, ये बात बताने आया है,
झंडा वंदन साथ करे, ये शपथ दिलाने आया है।।
हर इकाई में जो भी अब, झंडा फहराने आया है,
झंडा वंदन भूला के भाषण, से मिलवाने आया है।
भाषण और संबोधन को, आतुर बतलाने आया है,
भाषण में पीठासीनों की, बकवास सुनाने आया है।।

हर इकाई में ऐसा ही, मंजर दिखलाने आया है,

नेता बन भाषण की, तैयारी बतलाने आया है।

पूर्वाग्रह से ग्रस्तों से, भविष्य सुनाने आया है,

भ्रष्टाचारी के नियम, कानून, फसाने लाया है।।

भाषण देने वालों को, इतना बतलाने आया है,

झंडे में भाषण गौण बना, ये बतलाने आया है।

संविधान निर्माता ना हैं, ये बतलाने आया है,

ना भारत उनसे बनता, ये बतलाने आया है।।

काम करो, सम्मान करो, ये समझाने आया है,

देश का हो स्थान प्रथम बस, ये मनवाने आया है।

गणतंत्र दिवस पे झंडे की महिमा बतलाने आया है,

संविधान के सिद्धांतों की, याद दिलाने आया है।।

देश में ये गणतंत्र की जड़, मजबूत बनाने आया है,

गौरवशाली भारत को, शीशा दिखलाने आया है।

आज तिरंगे में भारत का, अक्स दिखाने आया है,

शेखर ये भारत को भारत, से मिलवाने आया है।।

12. शहीद दिवस

30.01.2021

बापू कह जिनका मान करें,

कह राष्ट्र पिता सम्मान करें,

आज पुण्य तिथि पर उनका
ये देश जरा गुणगान करें।
आजादी का अभिमान करें,
शहीद दिवस संज्ञान करें,
आजादी के परवानों का सब
मिलकर आज बखान करें।
परतंत्र जो युग ऐलान करें,
सेनानी को बलिदान करें,
जितने थे उस युग के नेता,
सबको जाहिर महान करें।
देश में मिल अभियान करें,
हो देश प्रथम पहचान करें,
जनता के मानस में हरदम

देशभक्ति अरमान करें।

13. कालाष्टमी

04.02.2021

जय शिव विग्रह, नमन करूं,
जय काल भैरव स्तवन करूं,
माघ मास के कृष्ण पक्ष की,
भव्य कालाष्टमी स्मरण करूं।

पंचम शिव अवतार नमन हे,
भय, रोगों का आज शमन हे,
सज त्रिशूल, तलवार, दंड हे,
दंडपाणि का आज भजन हे।

शत्रु, बाधा, दुर्भाग्य पलायन,
मनोकामना पूर्ण का गायन,
शनि-राहु भी शान्त हो गए,
शेखर याचक, करता गायन।

14. षटतिला एकादशी

07.02.2021

पावन माघ एकादशी, कृष्ण पक्ष संज्ञान,
आज हुई है षटतिला, एकादशी ये मान।
कृष्ण पूजन का सुनो, इस दिन है विधान,
छह प्रकार से तिल से, करते है अनुष्ठान।

तिल मिश्रित जल से करना उत्तम है स्नान,

और बाद में तिल उबटन लेपन का विधान।
तिल से करना हवन है, और तिल का दान,
तिल का भोजन और, मिश्रित जल का पान।

तिल के षटप्रयोग के, उत्तम फल पहचान,
सात्विक भोजन, ना नमक, लेना ऐसा गान।
शेखर करता कर जोर ये, विनती है भगवान,
अच्छा सब कर दिजिए, उचित ही दें वरदान।

15. मौनी अमावस्या

11.02.2021

माघ मास का मध्य आज,
है अमावस्या सोचे समाज,

मौन रहें स्नान तलक ये,

मौनी अमावस्या हुई आज।

उठना प्रातः जल्दी, ये राज,

मौन रहो बस इतना काज,

स्नान करें तब तक पालन

करना है ये कहता समाज।

अर्ध्यदान सूरज को आज,

पीपल पूजन का करें काज,

स्नान बाद करना ये काज,

पितरों को करना याद आज।

गृह कलह दिजिए त्याग आज,

भोजन, श्रृंगार, मन, वचन आज।

मन बस वश में रखेगे सभी,

संयम रखने का दिन है आज,

कि स्नान, मौन, संग दान आज,

पितरों की याद, संयम का साज,

मौनी अमावस्या आई है आज,

आशीष, कृपा, मिलते है आज।

16. मां सरस्वती वर दे

16.02.2021

मां सरस्वती! ऐसा वर दे,

लिखता जाऊं ऐसा कर दे।

संगीत, सुरों को ना गर दे,
पुस्तक, स्वर बस मेरा कर दे।

हे वीणावादिनी! घट भर दे,
अक्षर, लय, भाव मेरा कर दे।
कागज को श्वेत नहीं धर दे,
उनपे अक्षर काले कर दे।

पुस्तकधारिणी! तम हर ले,
मुझमें भक्ति के पद भर दे,
संप्रेषण के हर ढंग भर दे,
मेरा लिक्खा अमर कर दे।

खुश होने का सफर कर दे,

बस संग मेरे दुनिया कर दे,
मुस्कान खिले, ऐसा वर दे,
लेखन मेरा भी निडर कर दे।

ना हंस धवल, मेरा कर दे,
लेखनी पे तो, नजर कर दे,
ना शब्द घटे, इतना भर दे,
हर भाव में, उत्तमता भर दे।

शेखर को बस इतना वर दे,
पाठक जन से गागर भर दे,
रूचि लेखन में अमर कर दे,
हो सरस, सरल, ऐसा वर दे।

17. सरस्वती पूजन

16.02.2021

वाणी, स्वर, संगीत प्रदायिनी
अहम् भजामि, विद्या दायिनी,
सरस्वती देवी शुभ कारिणी,
बुद्धिप्रदां मां हे! वर दायिनी।

कमलासन मां! हंसवाहिनी,
स्वरप्रदायिनी, वीणावादिनी,
कला, ज्ञान सम वरप्रदायिनी,
नमामि देवी पुस्तकधारिणी।

आरम्भ सृष्टि, ब्रह्मा हैं रचते,

जन्मदिवस देवी की सजते,
स्वर अलौकिक ऐसे बजते,
जग में तब संगीत उभरते।

दिवस माघ शुभ शुक्ल पंचमी,
जग प्रचलित है उदया पंचमी,
ज्ञान पंचमी सहित श्री पंचमी,
कहें नमो, नमः बसंत पंचमी।

शुभकार्यों का दिवस ये अनुपम,
गृहप्रवेश नव निलय हो उत्तम,
आयोजन, विद्यारंभ, अन्नप्राशन,
आज शुभ इच्छित ठाने मुंडन।

माता का है रूप चतुर्भुज,
वीणा-पुस्तक-माला हैं भुज,
वरदायी उनके चौथे भुज,
नमन तेज अचंभित अरूज।

18. सीता अष्टमी

06.03.2021

जनक लिए हल बने किसान,
मिली बालिका, उस दौरान।
हुईं प्रकट वैदेही बनी संतान,
अष्टमी का सब सुनो विधान।
जनकसुता का जन्म प्रमाण,
मिथिला में आईं उनसे जान,

सूखा अकाल से त्रस्त स्थान,
वहां वृष्टि के चरण प्रदान।
फाल्गुन अष्टमी हुई महान,
कृष्ण पक्ष से है पहचान,
जानकी अष्टमी रखो ज्ञान,
ये दिन उत्तम, व्रत लो ठान।
सुहागिनों की बढती शान,
व्रत का ऐसा बना विधान,
इस दिन पीला अर्पण गान,
सीता पूजन कर लें विद्वान।
पति दीर्घायु हो इससे भान,
परिवार सुखी होता संज्ञान,
शादी की बाधा का बलिदान,

सीता अष्टमी जय गुनगान।

सीताजी प्राकट्य विधान,

अवतरण का लेना संज्ञान,

व्रत करने की दिल में ठान,

सुख आएगा संग सम्मान।

19. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

08.03.2021

अंतर राष्ट्रीय बना हुआ और, आज मनाने बैठे हैं,

महिलाओं का दिवस साथ, सब एक मनाने बैठे हैं।

महिलाओं में नारी शक्ति, हम आज जगाने बैठे हैं,

खुद से वे मिल लें प्रण ऐसा, आज निभाने बैठे हैं।

मना रहे हैं ठीक है पर, यथार्थ बताने बैठे हैं,

दिवस मनाकर ना होगा कुछ, ये बतलाने बैठे हैं।

वे सशक्त हैं, वे प्रकृति, हम धरा बता कर बैठे हैं,

हम भारत में नारी को, माँ दुर्गा सम कर बैठे है।

उनसे ही परिवार बने, समाज बना कर बैठे हैं,

उनसे ही हो संस्कार, ये आज बता कर बैठे हैं।

मना रहे हैं ठीक है पर, यथार्थ बताने बैठे हैं,

दिवस मनाकर ना होगा कुछ, ये बतलाने बैठे हैं।

देशों की मुखिया बनती, सरकार चलाने बैठे हैं,

और सेना में उनसे हो, ललकार बताने बैठे हैं।

वैज्ञानिक, नेता, अभिनेता, शिक्षक मानकर बैठे हैं,

गाड़ी, वाहन, वायुयान, का चालक मानकर बैठे हैं।

सब क्षेत्रों में नारी का, अरमान जगाकर बैठे हैं,

वो पुरूषों के आज बराबर, यही बताकर बैठे हैं।

मना रहे हैं ठीक है पर, यथार्थ बताने बैठे हैं,

दिवस मनाकर ना होगा कुछ, ये बतलाने बैठे हैं।

आज सशक्तिकरण में बाधा, नारी को कह बैठे
हैं,
आठ मार्च की हुई क्यों जरूरत, यही बताने बैठे
हैं।
हीरा ही हीरे को काटे, नारी को कह बैठे है,
नारी नारी को काट रही, ऐसा यथार्थ कह बैठे
है।
मना रहे हैं ठीक है पर, यथार्थ बताने बैठे हैं,
दिवस मनाकर ना होगा कुछ, ये बतलाने बैठे
हैं।

घर में बहू की सास ननद है, यही बताने बैठे है,
देवरानी से लड़े जेठानी, यही बताने बैठे है।
दफ्तर में कुर्सी पर नारी, सफल बताने बैठे हैं,

अन्य नारियों पे वो भारी, ये बतलाने बैठे है।
मना रहे हैं ठीक है पर, यथार्थ बताने बैठे हैं,
दिवस मनाकर ना होगा कुछ, ये बतलाने बैठे हैं।

इस महिला दिन पर ये बातें, खास बताने बैठे हैं,
ना अबला वे शक्ति स्वरूपा, यही मान के बैठे हैं।
शेखर करता नमन नारी का, मस्तक नत हो बैठे हैं,
सृष्टि स्रोत सशक्त सदा, ना दिवस प्रदत्त हो बैठे हैं।

20. विश्व कविता दिवस

21.03.2021

विश्व कविता दिवस है सब, ले रहे संज्ञान हैं,
आप सबकी कविता पढ, हो रहे विद्वान हैं,
कविता नामालूम इससे, सब रहे अनजान हैं,
पर करेंगें कविता ऐसा, ही लिया अब ठान है।
भाव गायब, अर्थ के विस्तार का अवदान है,
समझ लेंगें कविता, फंसती पाठकों की जान है,
कवि की थी कल्पना पर, अलग ही विधान है,
आज कविता छद्मवेशी, बन के पाती शान है।
गद्य की पंक्ति को तोड़ा, बनी कविता आन है,
कविता में भी शब्द के, प्रवाह में व्यवधान है,
भाव के सोपान चढना, अभिधा का सम्मान है,

लक्षणा और व्यंजना से मुक्त कविता ज्ञान है।
दिवस उसका मनाते, जिसकी घटी हो शान है,
आज कविता की यही, नियति बनी ये ज्ञान है,
कहे शेखर, ये भी कविता है या कोई उड़ान है,
आज हिन्दी कविता को, दे दें नई पहचान है।

21. हनुमान जयंती

27.04.2021

हनुमान जयन्ती हुई आज,
हे वायुपुत्र! सतनमन आज,
हो कृपादृष्टि, हे देव! आज,
करजोर खड़ा मानव समाज।

अब धरा त्रस्त ऐसे मिजाज,
बाधित वायु आपूर्ति आज,
बस हो बहाल वायु सुराज,
हो प्राणवायु वृष्टि से नाज।

हर मानव लक्ष्मण बना आज,
है मेघनाथ, वो जिसपे गाज,
हे देव! करें इतना बन बाज,
बहुतायत संजीवनी दे आज।

अब पर्वत से ना बने काज,
इस धरा पे संजीवनी का राज,
हर जगह बूटी मिलती हो आज,
मृत भी सजीव हो जाए आज।

कोरोना पर गिर जाए गाज,
हो गदा वार, हे देव! आज,
बस कृपादृष्टि का छेड़ साज,
स्वास्थ्य लाभ पाए समाज।

शेखर के दिल की है आवाज,
हे हनुमान! वायरस पे गाज,
हे वायुपुत्र! दें वायु आज,
सत-सत वंदन, हे देव आज।

22. देव वंदन चालिसा

04.05.2021

हे देव! विकट यह कीट जाल,

अतिसूक्ष्म कहें, पर है विशाल,

इससे जग का जीना मुहाल,

सब ओर बोलते अब श्रृगाल।

मरघट सम जग बनता सकाल,

ना पूजन स्वर, घंटे घड़ियाल,

अब सुप्रभात पे भी सवाल,

कब अंत हो उच्छृंखल बवाल?

कलियुग का फैला मकर जाल,

अब त्रस्त हुए जन सब निढाल,

ये लील रहा जीवन के साल,

है कुपित प्रकृति का धमाल।

ताकतवर वायरस का मलाल,

ना गलती कोई आज दाल,

प्रगति पर ऐठें अब बेहाल,

है दवा, दुआ दोनों ही काल।

क्रंदन, करूणा करते कमाल,

किस्मत का ऐसा हुआ हाल,

मुश्किल कि पूछें हाल-चाल,

कब कौन ग्रस्त दिल में भूचाल?

ये जैव युद्ध, इसका जमाल,

हर मानव पर इसका रूमाल,

या धरा पूछती अब सवाल,

ना की संसाधन देख भाल।

मानव हल खोजे, पर ये हाल,

अब नहीं ज्ञात वाजिब सवाल,

अब कर्म के भी टूटे हैं ताल,

क्या कर बदलेगा हाल चाल?
वंदन, पूजन, सब भूलभाल,
मानव प्रयोग का बना माल,
थूक, खून, क्षय कर ये हाल,
ना है सूकून, डर है बहाल।
अब प्राणवायु भी है मुहाल,
वो मुफ्त था ऐसा था ख्याल,
कीमत देकर ना मिले माल,
ऐसी हालत में क्या उबाल?
कह शेखर ईश्वर लें संभाल,
गलती मानव की है विकराल,
अब क्षमा देव! मानव बेहाल,
वापस ले लें ये कीट जाल।

23. परशुराम अराधना

29.05.2021

दुनिया पे संकट है अपार,
विष्णु के हे आवेशावतार!
अब परशुराम से ये गुहार,
विषाणु शून्य होगा विहार।

शिरोच्छेद करने का भार,
माता दंडित परशु की मार,
ये दुष्ट विषाणु का विहार,
हो बंद, रखें ऐसे विचार।

सहस्रार्जुन भी गया पार,

लड़ा मगर परलोक सिधार,
बस वैसा ही पुनरोद्धार,
ये धरा मांगती है पुकार।

इक्कीस बार था जो प्रहार,
क्षत्रिय शून्य हर एक बार,
करना ऐसा फिर एक बार,
हे देव! विषाणु पे हो वार।

हे देव! न खुद करना जो वार,
तो भीष्म, द्रोण को दे ये भार,
ऐसे शिष्यों का हो प्रहार,
तो मुक्त धरा से हो विकार।

हे परशुराम! षष्ठम अवतार,

आप कल्कि गुरू है विचार,

करजोर करे शेखर पुकार,

विषाणु लुप्त में हो शुमार।

24. रक्षाबंधन

03.08.2020

रक्षाबंधन के त्योहार,

पर मेरे इतने उद्‌गार,

बहनें सारी हैं तैयार,

लेकर राखी स्नेह अपार।

देश सुरक्षा की ललकार,

सैनिक तत्पर हैं हर बार,
उनका राखी पे अधिकार,
नमन उन्हें करना इस बार।

आज कोरोना पर है वार,
अस्पताल में जंग अपार,
सिस्टर्स का मानो उपकार,
राखी बांधो, उन्हें पुकार।

पुलिस आज के सूत्रधार,
कानून व्यवस्था के आधार,
हर संकट का लेते भार,
बांधो राखी, व्यक्त आभार।

बहनें सक्षम हैं कई बार,
भाई का कर बेरा पार,
उन बहनों का ये अधिकार,
भाई राखी बांधे यार।

भारत ने पाया आकार,
वहन किया था जिसने भार,
उन सबको देना आभार,
इस रक्षाबंधन पे यार।

ईश्वर वंदन की दरकार,
जीवन उनका दिया उधार,
नमन करो नित करो पुकार,
जीवन रेखा, बिन रहे दरार।

रक्षाबंधन में इस बार,

करना है नूतन आचार,

जिनसे जीवन लिया उधार,

सबका राखी पर अधिकार।

25. श्री राम से बेरा पार हुआ

05.08.2020

जब आज कोरोना काल हुआ,

जब रूप जरा विकराल हुआ,

जब वक्र दृष्टि सा जाल हुआ,

जब मानव कुछ बेहाल हुआ।1।

जब डर से सब बदहाल हुआ,

जब सेठ सभी कंगाल हुआ,
जब मरना एक सवाल हुआ,
जब गिनती पर भूचाल हुआ।2।

जब त्रस्त सभी का हाल हुआ,
जब विकट आसुरी काल हुआ,
जब निधन कई अकाल हुआ,
जब रोग बढा, बैताल हुआ।3।

जब धर्म पे कोई वार हुआ,
मानवता का संहार हुआ,
तब ही कोई अवतार हुआ,
जिससे सबका उद्धार हुआ।4।

जब संकट थोड़ा दुश्वार हुआ,
रावण सम जब व्यवहार हुआ,
रोकें इसको ये, विचार हुआ,
श्रीराम का तब, अवतार हुआ।5।

श्री राम जपो, अभिसार हुआ,
संकट में तब, त्योहार हुआ,
मंदिर प्रण का संचार हुआ,
भूमि पूजन, इस बार हुआ।6।

भव्य वो मंदिर, द्वार हुआ,
संकल्प किया, उद्गार हुआ,
मंदिर पर तब, सहकार हुआ,
श्री राम से बेरा, पार हुआ।7।

कृष्ण पक्ष विस्तार हुआ,
दिन द्वितीया का संचार हुआ,
बारह बजने से प्यार हुआ,
पूजन मूहूर्त इस बार हुआ।8।

वृहत जरा इस बार हुआ,
और जन्मभूमि त्योहार हुआ,
निर्माण या जीर्णोद्धार हुआ,
श्री राम भजो, से प्यार हुआ।9।

आमंत्रण भेजा, प्रचार हुआ,
सबको यह तब स्वीकार हुआ,
भक्ति रस का संचार हुआ,

कल्याण सुनिश्चित द्वार हुआ।10।

स्वेच्छा से सब तैयार हुआ,
शामिल पूरा संसार हुआ,
अमरिका तक प्रसार हुआ,
सुख समृद्धि विस्तार हुआ।11।

मर्यादा पुरूषोत्तम सार हुआ,
दशरथनंदन जयकार हुआ,
कौशल्या सुत, उपकार हुआ,
रावण अरि हैं, उदगार हुआ।12।

मन रमे राम, इकरार हुआ,
सेवक उनके, इसरार हुआ,

भवसागर से तो पार हुआ,
जब शरण लिया, उद्धार हुआ।13।

जब रामलला, दीदार हुआ,
सब दुख का तब, संहार हुआ,
अवसाद मुक्त संसार हुआ,
जय राम नाद विस्तार हुआ।14।

श्रीराम का जब यलगार हुआ,
ये नाम ही अब परिवार हुआ,
जब चरण पादुका भार हुआ,
तब रामराज्य विस्तार हुआ।15।

जब राम नाम का वार हुआ,

ताड़का, कबंध संहार हुआ,
खर दूषण तक का मार हुआ,
राक्षस समूल प्रतिकार हुआ।16।

केवट भवसागर पार हुआ,
शबरी का भी सत्कार हुआ,
अहल्या का उद्धार हुआ,
बस राम भजो, आभार हुआ।17।

स्रोताओं का अंबार हुआ,
क्लेषों का तब उपचार हुआ,
रामायण सुन एतबार हुआ,
कि राम युक्त संसार हुआ।18।

तुलसी का मानस पार हुआ,
वाल्मीकि राम का सार हुआ,
हर राम कथा का ज्वार हुआ,
बस राम सुनो, इकरार हुआ।19।

तम घोर चतुर्दिक सार हुआ,
जब जीना भी दुश्वार हुआ,
जब हृदय राम, आगार हुआ,
तम छटा ज्यों खर पतवार हुआ।20।

करजोर खड़े, विचार हुआ,
श्री राम जपो, विचार हुआ,
श्री राम कृपा, संचार हुआ,
जय जय बोलो, हर बार हुआ।21।

श्री राम जपो, उद्गार हुआ,

वे कष्ट हरें ये, प्रचार हुआ,

जयघोष में ये संसार हुआ,

जय जय श्री राम अवतार हुआ।22।

26. स्वतंत्रता दिवस पे सब सो गए

13.08.2020

स्वतंत्रता का जश्न है, सब खो गए,

सच्चा नहीं ये स्वप्न है, सब सो गए,

जद्दोजहद के बाद आजादी मिली,

तसल्ली से पहले ही, सब सो गए।

परचम पे कोई राय देना ना जंचा,

अपना तिरंगा भूलकर, सब सो गए।
झंडा-वंदन पर दिखा, आलस्य तब,
पर्व कह छुट्टी मना, सब सो गए।

पाश्चात्य धुन पर थिरकते हैं पर सुना,
राष्ट्रीय सुनकर गान फिर, सब सो गए।
दे रहे, इस धुन पे अपनी, राय सब,
आधुनिक दिखना जिन्हें, सब सो गए।

मूर्ख थे हम, साल भर इंतजार कर,
इस पर्व पे खुश हो रहे, सब सो रहे,
जज्बात सारे भूलकर कुछ ना कहा,
चैतन्य सारे आज, जड़ बन सो रहे।

इतिहास ना आकर कहेगा, कि करो,
खुद का जज्बा मारकर, सब सो रहे,
दिल की हसरत मर गई अब देश में,
फरमान ना आया तो, सारे सो रहे।

देशप्रेमी ना बने, पर नागरिक,
बनना गवारा है नही, सब सो रहे,
कोई जगाकर कहेगा, ऐसा समझ,
जबरदस्ती ना हुई, सब सो रहे।

दिल में झंडा, देश, रखना था जिन्हें
उनपे कर बकवास, सारे सो रहे,
और दिन को छोड़िए, पर आज भी,
स्वतंत्रता के पर्व में, सब सो रहे।

मुफ्त की मिल जाएगी, स्वतंत्रता,

कौड़ियों का भाव दे, सब सो रहे।

परतंत्रता ना समझ पाए हैं सभी,

इसलिए तो आज भी, सब सो रहे।

27. आजादी का मतलब क्या है?

15.08.2020

घूम घूम कर पूछ रहा हूं, आजादी का मतलब क्या है?

उत्तर आए भूल गया कि, सही गलत का अंतर क्या है।

लूट पाट अपराध कर रहे, आजादी का यही
सिला है,

सीनाजोरी साथ कर रहे, आजादी से यही मिला
है।

सोने की चिड़िया था लेकिन, वर्तमान में यही
गिला है,

जश्न भूत का, वर्तमान में, ऐसा सदमा यहीं
मिला है।

आजादी में बदहाली है, आखिर इसका मतलब
क्या है?

घूम घूम कर पूछ रहा हूं, आजादी का मतलब
क्या है?

शिक्षा में था सर्वश्रेष्ठ पर, आज पिछड़ हम जाते
हैं,

शिल्प, कला, दर्शन, से अब, हम देखो कतराते हैं।

विज्ञान, गणित का ज्ञान चक्षु भी, बंद हुआ ये पाते हैं,

मूल भूत ना शोध हो रहा, नकल विदेशी पाते हैं।

शिक्षा के गिरते स्तर का, आजादी में मतलब क्या है?

घूम घूम कर पूछ रहा हूं, आजादी का मतलब क्या है?

आजादी में तर्क भूलाकर, बदजुबानी का मंजर है,

देश से ऊपर खुद बैठे दिल, देशप्रेम से बंजर है।

देश की सोचें ऐसे जज्बे, में सारे ही कंजर है,

सभी क्षेत्र में आज देश का, दिखता अस्थि पंजर
है।
देश में लोभी जनता-नेता, आजादी का मतलब
क्या है?
घूम घूम कर पूछ रहा हूं, आजादी का मतलब
क्या है?

आजादी त्योहार बना है, जो अगस्त में आता है,
झंडा वंदन, भाषण-राशन, इस दिन पाया जाता
है।
सरकारी छुट्टी है सबको, सोता पाया जाता है,
बच्चे भी भौचक्के है, क्यों इसे मनाया जाता है।
आजादी है पर्व नहीं तो, इस छुट्टी का मतलब
क्या है?

घूम घूम कर पूछ रहा हूं, आजादी का मतलब
क्या है?

भारत की जय नहीं कहूंगा, ये कहना आजादी है,

चीन, पाक का मान बढाते, इससे ही बरबादी है।

धन, संतति, को बाहर भेजें, पहन रहे जो खादी
है,

विसंगति इतने सारे पर, हम सब इसके आदी
हैं।

कथनी से करनी की देखो, आजादी का मतलब
क्या है,

घूम घूम कर पूछ रहा हूं, आजादी का मतलब
क्या है?

28. हम भारत से आएं हैं

15.08.2020

सालगिरह आजादी की, झंडा फहराने आएं हैं,
आज विश्व को प्रगति का, मंजर दिखलाने आएं हैं।
क्षेत्र सभी में आज प्रथम, होकर दिखलाने आएं हैं,
भारत के परचम को जनता, से मिलवाने आएं हैं।1।

आज स्वदेशी उत्पादन कर, कुछ समझाने आएं हैं,
देश हमारा स्वाबलंबी अब, आज बताने आएं हैं।

शोध करें, उत्पाद को हम, आधुनिक बनाने आएं हैं,

सरल हुए जो कठिन कभी, अब सब करवाने आएं हैं।2।

ध्वजा हमारी बढी जा रही, ये बतलाने आएं हैं,

राष्ट्रगान से अम्बर पर, अंकित करवाने आएं हैं।

जय भारत का नाद हो रहा, खुशी जताने आएं हैं,

देश हमारा प्रगत नहीं, अग्रणी बनाने आएं हैं।3।

29. गणपति वंदन

22.08.2020

गणपति बप्पा, आए द्वार,

करने को, सबका उद्धार,
सुख समृद्धि, अपरम्पार,
लाएंगे वो, अबकी बार।

गणनायक, अब रहे पधार,
मूषक पर चढ, करें विहार,
मोदक उनका, प्रिय आहार,
स्वागत करने, सब तैयार।

पार्वती-शिव तनय, निहार,
प्रथम पूज्य, के चरण पखार,
सबके मुख से, स्वर इस बार,
जय गणेश, जयघोष अपार।

ऋद्धि-सिद्धि के, हैं आगार,
दुख संकट का, करें निवार,
गणपति मेरी, सुनें गुहार,
आप पधारें, मेरे द्वार।

गजमुख उपमा, से कर प्यार,
लम्बकर्ण, आशीष फुहार,
विघ्न हरण, उनका अधिकार,
गणनायक, करिए उद्धार।

30. विनायक वंदना

23.08.2020

हे प्रथम पूज्य, हे शिवगण नायक,

जय गणपति, जय विघ्न विनायक।

हे शूपकर्ण, जय जय सुखदायक,
ऋद्धि-सिद्धि के स्रोत, विनायक।
हे कष्ट निवारक, शुभ परिचायक,
मोदक-मूषक, सहित विनायक।1।
हे प्रथम पूज्य, हे शिवगण नायक,
जय गणपति, जय विघ्न विनायक।

हर संकट का नाश, यकायक,
अगर लिया है, नाम विनायक।
कला, ज्ञान, विज्ञान, प्रदायक,
मानव दिल में बसे विनायक।2।
हे प्रथम पूज्य, हे शिवगण नायक,

जय गणपति, जय विघ्न विनायक।

हे वृहत ग्रंथ, महाभारत दायक,

अर्पित श्रद्धा सुमन, विनायक।

हे पार्वती-शिव पुत्र, निर्णायक,

कृपा करो मुझपर, हे विनायक।3।

हे प्रथम पूज्य, हे शिवगण नायक,

जय गणपति, जय विघ्न विनायक।

31. बप्पा के पकवान प्रसार

23.08.2020

गणपति बप्पा का आभार,

व्यंजन बनते, हैं हर द्वार,

मोदक, लाड्डू की भरमार,

लम्बोदर की जयजयकार।1।

बप्पा का करने सत्कार,

खोबरा लाड्डू धुआंधार,

इतने पर ना रूका प्रचार,

नाचनी लाड्डू भी तैयार।2।

उकड़ीचे मोदक संसार,

जो सबकी टपकाए लार,

चिवड़ा भी रखा था डार,

ऐसा है, इस पर्व का सार।3।

पांच मुख्य पकवान विचार,

पूरन पोली, पहला वार,

मीठी पुरी, से है बहार,

मालपुआ दूजा आहार।4।

लाड्डू खजूर का, हो स्वीकार,

केसरिया श्री खंड तैयार,

खसखस का करने उद्धार,

हलवा बनता अबकी बार।5।

इतने पकवानों का सार,

बप्पा को खाने से प्यार,

भोग लगा, जप करो अपार,

गणपति चरणों में उद्धार।6।

32. जय गणेश

25.08.2020

गणनायक की जयजयकार

मोदक, लाड्डू से सत्कार,

मूषक पे, होतें हैं सवार,

बप्पा की सुन लो हुंकार।

सब बाधाओं को ललकार,

शुभ होने का करो विचार,

गजमुख से होगा उद्धार,

जय गणेश की करो पुकार।

एकदंत सुख के आगार,

कृपा बरसती अपरम्पार,

कष्ट निवारक करुणावतार,

करो मुझे भवसागर पार।

पार्वतीसुत! लो अवतार,
प्रथम पूज्य से है इसरार,
ज्ञान की सारे खोलें द्वार,
नमन मेरा कर लें स्वीकार।

विघ्न हर्ता का नाम पुकार,
लम्बोदर स्वर से कर प्यार,
नमः गजानन विश्व प्रसार,
जय गणेश! मेरे उद्गार।

33. हे गणपति! मोदक पान करो

29.08.2020

हे गणपति! मोदक पान करो।

विघ्न हरन, भगवान करो,
तम भेदन का संधान करो,
आलोकित पथ प्रदान करो,
हे गणपति! मोदक पान करो।

भवसागर में, जलयान करो,
हर कष्ट पे शर, संधान करो,
जाहिर अपना वरदान करो,
हे गणपति! मोदक पान करो।

हे प्रथम पूज्य, अवदान करो,
शिक्षण, शान्ति, विज्ञान करो,
धन संग समृद्धि, प्रदान करो,
हे गणपति! मोदक पान करो।

मंगल मूर्ति ! जग ध्यान करो,
जन जन का भी कल्याण करो,
हर मुख पर अब मुस्कान करो,
हे गणपति! मोदक पान करो।

मिलकर अब, जयगान करो,
गणपति वंदन की तान करो,
स्तुति कर ऐसा, गान करो,
हे गणपति! मोदक पान करो।

हे कृपासिंधु! पहचान करो,
शेखर पर कृपा-कमान करो,
उसको भी आयुष्मान करो,

हे गणपति! मोदक पान करो।

34. ओनम पर्व

30.08.2020

मलयालम का नव वर्ष आज,
है माह ये चिंगम का आगाज़,
कर फसल कटाई, करो नाज,
केरल का पावन पर्व आज।

हो वल्लम कली, चलते जहाज,
पुली कली! बाघ बनता समाज,
पोक्कालम! घर सज रहा आज,
केरल का पावन पर्व आज।

कोमात्तीकली! मुखौटा राज,
ओनाविल्लू! कर्णप्रिय साज,
ओनाथल्लू! रण में बनो बाज,
केरल का पावन पर्व आज।

आगमन हुआ राजा का आज,
धरती सारी पुलकित, सुराज,
हे महाबली! स्वागत महाराज,
केरल का पावन पर्व आज।

शुभकामनाओं से भरा ताज,
कर स्वीकार, केरल समाज,
शेखर देता ये चंद अल्फाज,
केरल का पावन पर्व आज।

35. मिच्छामि दुक्कडम

30.08.2020

जैन धर्म पालन करें, सत्य, अहिंसा हरदम,
अपरिग्रह संग अस्तेय का पालन उत्तम धरम।
पर्युषण है आठ दिन, श्वेतांबर जन के करम,
अष्टान्हिका का नाम ले, पालन करना धरम।
दसलक्षण का नाम दे, करें दिगम्बर करम,
हर दिन दस में एक का, होगा पालन उत्तम।
क्षमा, मार्दव, आर्नव, सत्य साथ में संयम,
शौच, त्याग, तप और अकिंचन्य के नियम।
ब्रह्मचर्य का नाम है, ये दस उनके प्रियतम,
पर्युषण पावन पर्व है, जैन धर्म अति उत्तम।

पर्युषण के अंजाम दिन, जैन ले रहे कदम,
कहते है प्रतिक्रमण है, भक्ति भरी है चरम।
श्वेतांबर समुदाय में, संवत्सरी का कदम,
और दिगंबर में कहें क्षमावाणी हो नरम।
जाने-अनजाने गलतियां, करते हैं हरदम,
उन्हें करें कबूल और, पश्चाताप में रम।
जैन धर्म की रीतियों, से चयुत हुए कदम,
उनपर मांगे हैं क्षमा, यही धर्म का मरम।
मिथ्या मेरे दुष्कर्म हों, दिल में ऐसा कदम,
वचनों से जाहिर करें, त्याग के सारे शरम।
सारा मिथ्या और गलत, हो जाएगा बेदम,
प्राकृत में कहते इसे, मिच्छा मि दुक्कडम।

36. जय गणनायक, रक्षणकर्ता

31.08.2020

जय जय हे, गणपति सुखकर्ता,
विघ्नविनाशक, जग दुखहर्ता।
हे कृपागार, अति मंगलकर्ता,
संकट दुख के, मोचक भर्ता।
जय गणनायक, रक्षणकर्ता।

जय पार्वतीसुत, संकटहर्ता,
जनक आपके, त्रैलोक्यकर्ता,
गणनायक, कैलाश विचरता,
रिद्धि सिद्धि हैं भार्या, ये भर्ता।
जय गणनायक, रक्षणकर्ता।

गजमुख, मोदक भक्षणकर्ता,

लम्बोदर, शुभ लाभ ही कर्ता,

जय शूपकर्ण, ऊर्जस्वी कर्ता,

हे प्रथमपूज्य, समृद्धि कर्ता।

जय गणनायक, रक्षणकर्ता।

37. रावण का दशहरा

09.10.2020

द्वार पर दस्तक हुई, खोला तो रावण था खड़ा,

कैसे बचेगा आज, कोरोना का संकट है बड़ा।

राम के हाथों ही मरना है, वो इसपर था अड़ा,

और विजयादशमी से, पहले न मरने पे अड़ा।

पूछता था, हरण करना, क्यों जरूरी है बड़ा,
आज दिक्कत है बड़ी, कोई न सुनता है खड़ा।
तीन गज की दूरी से, अपहरण करना है पड़ा,
और उसके बाद फिर, धोना नहाना है पड़ा।

इस कोरोना काल में, नियम का पालन है कड़ा,
रक्षक यहां पर दण्ड लें, डंडे दें, खर्चा है बड़ा।
दूर रहना ठीक है पर, मास्क मुंह पर हो पड़ा,
पर बड़ी ये बात, दस दस मास्क लेना है पड़ा।

कह रहा रावण कोरोना से ये संकट है बड़ा,
क्या ना आयेंगे प्रभु, वो सामने जिनसे लड़ा।
रावण दहन के मार्ग में, अवरोध ऐसा है बड़ा,
जहर खाकर आत्महत्या, कर मनेगा दशहरा।

38. आप लिखेंगे

14.10.2020

आप लिखेंगे, उस दिन तक,
ना मंत्र, पुष्प, नाराज मिले ।
मैं बाहर बैठा, मिल जाऊं,
गर सानिध्य मिजाज मिले ।।

गर आप लिखेंगे व्यास रचित,
तो गणपति का अंदाज मिले ।
मैं तो पढता ही जाऊंगा,
महाभारत सम जो काज मिले ।।

मंदिर खोजूं, मूर्ति खोजूं,
या शंखनाद आवाज मिले ।
उससे बेहतर कवि खोजूंगा,
जिससे नूतन आगाज मिले ।।

39. गोवर्धन पूजन

15.10.2020

कार्तिक मास त्योहार भरा,
ये शुक्ल पक्ष आरम्भ जरा,
ये दिवस प्रथम परिवेश हरा,
गोवर्धन पूजन ठान जरा।

पौराणिक थोड़ी सुनो जरा,

जल प्रलय से रक्षित रहे धरा,
श्रीकृष्ण कर्म कौतुक से भरा,
गोवर्धन पर्वत भी उठा जरा।

अतिवृष्टि से रक्षित हुई धरा,
सारे सजीव का भाग्य तरा,
पर्वत के सब कृतज्ञ जरा,
तब से गोवर्धन पूज्य जरा।

श्रीकृष्ण का पूजन करे धरा,
पकवानों से कई थाल भरा,
पर्व अन्नकूट भी नाम पड़ा,
जय हो मधुसूदन! कहे धरा।

धनहीन, लूला, लंगड़ा, बहरा,

संकट से जग हो मुक्त जरा,

श्रीकृष्ण कृपा पा जाए धरा,

गर कृपा मिले, भले कतरा।

शेखर की इच्छा, प्रफुल्ल धरा,

हर ओर मिले खिलता चेहरा,

सुख शान्ति समेटे हो सेहरा,

मन पावन, जैसे सोना खरा।

40. भारत में सरदार

31.10.2020

बल्लभभाई नाम के भारत में सरदार,

एक सूत्र में बांधकर, किया देश उद्धार,
जन्म दिवस पे नमन में उठी एक पुकार,
नाम एकता दिवस दे, भारत में यलगार।

भारत में सम्मति बनी, अनेकता स्वीकार,
क्षेत्र, धर्म, जाति, भाषा, उसके हैं आधार,
आज लड़ाई इन मुद्दों पर, होती अपरम्पार,
इसीलिए तो एकता, दिवस की होती हार।

अब तो भारत एक है, पर चलती है बयार,
अपना अपना कह रहे, अलग बना संसार,
अपना भारत ले चले, देश के पालनहार,
इसीलिए फिर चाहिए, भारत में सरदार।

41. एकता दिवस

31.10.2020

एकता से कर किनारा, कह रहे कि आज है,
राष्ट्रीय एकता का दिवस, शायद आज है,
सरदार के भारत विलय की याद आई आज है,
और भारत एक है तो, सरदार का ही काज है।

आज है उनकी जयन्ती, मनाना ये आज है,
जन्मदिन जिनका है, उनको देखता समाज है,
एकता का बीजारोपण, करना यहां पे आज है,
जिम्मेदारी देख तबीयत दिख गई नासाज है।

लौह पुरूषों से मगर, अब लुप्त ही अंदाज है,

देश की ना सोचते, खुद पे ही करते नाज है,
एक भारत मिल गया, खण्डित करे ये आज है,
कह रहे राष्ट्रीय एकता, दिवस आया आज है।

तोड़कर भारत को कहते, एकता पे नाज है,
और टीवी सिरियल की, एकता सरताज है,
उनको मिले पदकों से, ये भाल ऊंचा आज है,
हकीकत, नारी समझ, वो गर्व करते आज है।

देश में ऐसी ही दुविधा, दिख रही ये आज है,
कौन है सरदार और किस एकता पे नाज है,
छुट्टी मिली, आयोजनों का जोर ऐसा आज है,
एक भारत है मगर, अनेकता सरताज है।

एकता के दिवस पर, दंगे करे ये समाज है,
राष्ट्रीयता ऐसी कि ये, देशव्यापी आज है,
लड़ रहे, और मर रहे, इसपे न गिरती गाज है,
दिवस ऐसा मनाना, शायद जरूरी आज है।

एकता के दिन से ज्यादा, दिल मिलाना आज है,
सब एक हैं, ऐसा बताने की जरूरत आज है,
कौन थे सरदार, ये सबको दिखाना आज है,
एकता को सरदार का, चेहरा दिलाना आज है।

42. करवा चौथ

04.11.2020

ये करवा चौथ है, तो प्यार का एहसास जाहिर हो,

किया श्रृंगार सोलह और भक्ति साथ जाहिर हो,

करें पूजा जो शिव परिवार को, श्रद्धा समर्पित हो,

उमर लम्बी पति की हो, यही बस आस जाहिर हो।

जो काटें बिना कोई धार, इसमें जो भी माहिर हो,

ये उनके व्रत का उद्यापन है मंगल गान जाहिर हो,

चतुर्थी को जो देखें चांद को, जल ग्रहण करना हो,

सौभाग्यशाली, शान्ति, हासिल हो, जो ताहिर हो।

पति पत्नी का पावन पर्व, ये हर बार जाहिर हो,

बढेगा प्रेम और विश्वास, घर घर में ये जाहिर हो,

भले उपयोग ना करना, नुकीली वस्तुएं इस दिन,

मगर तीखे नयन का वार पत्नी का ही जाहिर हो।

43. त्योहारों का मौसम

07.11.2020

नवरात्रा से शुरू हो गया, मना रहे सारे त्योहार,

नौ रूपों में मां दुर्गा से, मिली शक्तियां अपरम्पार।

विजयादशमी आई तो, राम कथा का करो विचार,

मना रहे हैं दिवस वही, होता जब रावण का
संहार।

और पूर्णिमा को कोयजागरा, पर ऐसा होता
उद्धार,

चांद से और आकाश से होती है केवल अमृत
बौछार।

करवा चौथ का पर्व अनोखा, घर घर में सोलह
श्रृंगार,

करती है, निर्जल रहती है, पत्नियों से है परिवार।

अहोई अष्टमी आई तो उसमें ऐसा ही है
स्वीकार,

अनहोनी से होनी करने की होती इस दिन
दरकार।

रमा एकादशी में करना है, विष्णु कृपा का
इंतेजार,

रमा नाम लक्ष्मी का है, ये सुख समृद्धि दें हर बार।

गाय बछड़े का पूजन कर, पाप मुक्ति का है आधार,

गोवत्स द्वादशी किया करो, पंच पर्व का इंतेजार।

पांच पर्व मिल बने दीवाली, ऐसी आती रही पुकार,

धनतेरस से भाई दूज तक, पांच दिनों का है त्योहार।

नरक चतुर्दशी और गोवर्धन पूजन को होना तैयार,

इतने सारे पर्व मनातें, खुशियों से हर ओर बहार।

इन सारे का हुआ समापन, अर्क छठ का कर जयकार,

छत्तीस दिन का चक्र पर्व का, दिल में गूंजे हैं झंकार।

44. दीवाली नेपथ्य से

07.11.2020

सात दिन के बाद दीवाली, का मंजर आएगा,

आज दिखलाने को, दीवाली में अंधर आएगा।

आज से ही व्यस्त सारे, सफाई में इस कदर,

गंदगी करने को कोई, जैसे बंदर आएगा।

मेहनती मैदान मारें, मांझी बनेंगें क्रम से सब,

हृष्ट पुष्टों ने किया अब, अस्थि पंजर आएगा।

हथियार झाड़ू और पोछा ले के सारे पिल गए,

गंदगी को मारने अब , कैसा खंजर आएगा।

हर जगह माहौल में, सरगर्मियों का जोर है,

स्थिर बनाने के लिए, कोई तो लंगर लाएगा।

त्योहार का मतलब सही, कोई बताने आएगा,

और, मनाने के पूर्व ना, उत्साह बंजर पाएगा।

पटल पर सब मौन हैं, ये गौण होता जाएगा,

पौधे हलचल के दिखे, तब ही तो बंजर जाएगा।

45. धनतेरस

12.11.2020

भोर हुई, अब जागो सारे,

पंच पर्व एक साथ पधारे,

धनतेरस से भाईदूज तक,

खुशी बिखेरो मिलकर सारे।

धनतेरस को यही पुकारे,
धनवंतरी को पूजे सारे,
मंथन से अमृत लाए थे,
आयुर्वेद की पुस्तक धारे।

स्वच्छ घरों में यही पुकारे,
दीप जला, मिष्ठान्न संवारे,
मंथन से लक्ष्मी आईं थी,
स्तुति संध्या करेंगे सारे।

स्वर्ण रजत खनकेंगे सारे,
बर्तन की खरीद सहारे,

परंपरा का पालन करना,

धनतेरस शुभ होगा प्यारे।

46. सफाई पर्व

13.11.2020

दिवाली पे हुई सफाई,

गंदे की पुरजोर धुलाई,

झाड़ू समूह में चलता ऐसा,

पोस्ट पे देखो शामत आई।

आज पोस्ट पे शामत आई,

सूखा सारा पटल है भाई,

समय मिले तो साझा करिए,

पटल है खाली दिखता भाई।

पटल है खाली, करो रंगाई,
कविता भेजो, करो बड़ाई,
दिवाली आए, जाए पर,
पटल पे रौनक रहे समाई।

बहुत व्यस्तता कहें, बधाई,
मित्र, पटल से जुड़ें, भलाई,
चलो गुजारिश करता हूं कि
सारे मिलकर करो लिखाई।

47. धनवंतरी पूजन

13.11.2020

धनतेरस पर ये आह्वान,
धनवंतरी की पूजा शान,
लक्ष्मी को पूजा अब तक,
स्वास्थ्य का लेना है संज्ञान।

धन एकत्र किया था जान,
इसे जरूरी सबसे मान,
कोरोना ने समझाया है,
तन सबसे है ऊपर मान।

मंथन से जो रत्न महान,
धनवंतरी उनमें थे जान,
अमृत पे संकट था ऐसा,
देव दनुज लड़ने की ठान।

मानव की नियति ये मान
आयुर्वेद की पुस्तक जान,
धनवंतरी के कर कमलों में,
थी स्थापित ले संज्ञान।

धनतेरस पर करना अनुष्ठान,
औषधि पे मानव का ध्यान,
आयुर्वेदिक दवा मिलेगी,
धनवंतरी का हो जयगान।

देव दनुज को अमृत दान,
मानव आयुर्वेद का ज्ञान,
अपने हिस्से में जो आया,

आयुर्वेद का हो जयगान।

48. गुड्डू की शंका

14.11.2020

दिपावली पे गुड्डू बोला,

बूंदी लड्डू खाकर बोला,

पर्व सही, मिठाई सही,

जिज्ञासु होकर वो बोला।

वर्षों बाद वो वापस आना,

राजा का आगमन बताना,

राज्य के बाहर कैसा गाना?

जायज कैसे वहां मनाना?

मना रहे सब, उस प्रदेश में,

जिसे न मतलब उस नरेश में,

पर्व सही, औचित्य पे शंका,

क्यों मना रहे पूरे देश में?

मना रहे तो मूर्ति किसकी?

कारण में ना चर्चा जिसकी,

नाम किसी का, पूजन दूजा,

बहुत कठिन है गुत्थी इसकी।

कारण केवल इतना लगता,

पर्व मनाना, अच्छा लगता,

छुट्टी कर घर में बैठे सब,

मुझे डांटते, अच्छा लगता।

49. छोटी दीवाली

13.11.2020

छोटी दीवाली आई आज,
धनतेरस भी पड़ा है आज,
नरक चतुर्दशी, रूप चतुर्दशी,
सारे हो गए देखो आज।

शाम को इतना करना काज,
दीप दान यमराज को आज,
दक्षिण दिशा में जाकर करना,
अकाल मृत्यु की ना तब गाज।

रूप सलोना का ये राज,

स्नान करें बस इतना काज,
कृष्ण का पूजन सुबह करें,
तो रूप पे खुद के होगा नाज।

छोटी दिवाली भी है आज,
अंधियारे पर गिरेगी गाज,
हर तम का करने संहार,
अब प्रकाश का हो आगाज।

50. दिपावली उत्पत्ति

14.11.2020

शुभ दिपावली, शुभ अंदाज,
शुभ प्रकाश का शुभ आगाज,

शेखर की अभिलाषा इतनी,
रौशन जग और दीप्त समाज।

दिपावली का खुला है राज,
मना रहे और करे हैं नाज,
चौदह बरसों का वनवास,
काट राम आए थे आज।

अलग कथाएं गढे समाज,
कृष्ण कथा में ऐसा राज,
नरकासुर का वध इस दिन,
हुआ था ऐसा कहे समाज।

जैन धर्म में अलग हैं राज,

उनका अपना है अंदाज,

निर्वाण दिवस आई आवाज,

महावीर स्वामी की आज।

दिपावली की खुशी का राज,

जुड़ी कथाओं के अंदाज,

राम, कृष्ण और महावीर से

खुशी मनाते सभी समाज।

51. दिवाली अभिलाषा

14.11.2020

जगमग जगमग दीप लिए, दीवाली को रहे निहार,

धरती पर सारे तारे आएं, करना इतने दीप
तैयार।

सुबह सफाई, शाम में पूजा, दीप, पटाखों का
त्योहार,
साथ में मिलकर मना रहे, दीवाली का पावन
त्योहार।

है प्रकाश, आवाज प्रखर, खुशी से ऐसे हैं सत्कार,
लड्डू और मिठाई खाते, मधुर हुआ सबका
व्यवहार।

धन, समृद्धि, सुख ले आए, अंधेरा जाए, स्वर्ग
सिधार,

ये प्रकाश का पर्व हुआ, रात को दिन करना इस
बार।

परिजन, परिचित की इच्छाएं, पूर्ण करें ईश्वर
इस बार,
शेखर की अभिलाषा ऐसी, हे ईश्वर! कर जग
उद्धार।

52. दीवाली: कल बनाम आज

14.11.2020

बचपन में दिवाली करते,
दीप जलाते, पूजा करते,
फोड़ पटाखे खुश होकर,
लड्डू की ईच्छा थे करते।

दीप बदल मोमबत्ती करते,
महक नहीं प्रकाश ही करते,
बिजली वाले बल्ब लगाकर,
दीवाली अब रौशन करते।

पूजा तो हैं आज भी करते,
पर, मिट्टी की मूर्ति ना धरते,
और विसर्जन भूला के पूजा,
स्वर्ण मूर्ति रखकर हैं करते।

खुशी व्यक्त आवाज से करते,
पटाखों से रौशन जग करते,
आज प्रदूषण विकट हुआ है,

पटाखों से अब भागा करते।

खाते लड्डू, दीवाली करते,
अब मिलावटों से हैं डरते,
सूखा मेवा खाकर सारे,
दीवाली का भोग हैं करते।

नया जमाना, नया है करते,
परंपरा अब बदल के करते।
दीप, पटाखे, लड्डू, पूजा,
बदले नव दिपावली करते।

53. भाईदूज

16.11.2020

भाईदूज पे बहन के घर जा,
चंदन रोली लगवा कर आ।
लड्डू, खील, बताशे, बजरी,
बहना के हाथों से चर जा।।

बजरी कूटे बहन, पसर जा,
वज्र बनेगा भाई, तर जा।
बहन से ऐसी दुआ मिलेगी,
आयु बढेगी जरा ठहर जा।।

बहन भाई के साथ ठहर जा,
यमपाश भी आज बिखर जा।
नेग बहन को देकर तर जा,
भाईदूज आया है, सुधर जा।।

54. यम द्वितीय

16.11.2020

द्वितीया की तिथि को करे, कार्तिक ऐसा पावन,
शुक्ल पक्ष में पर्व अनेक, झड़ी है जैसे सावन।
यम द्वितीया के पर्व पर, भाई बहन हो साथ,
भाई याचक है इस दिन, बहन बनी है नाथ।।
यम निज बांधवी गृह गए, बड़े दिनों के बाद,
आवाभगत निज बहन से, पा पाया आह्लाद।
इस दिन भाई बहन के, घर जा खाना खाए,
वृद्धि हो आयुष्य की, दुआ जो ऐसी आए।।
फलित हमेशा होता है, बहनों का आशीर्वाद,
इसलिए तो बहन के घर, खाते भाई प्रसाद।

भगिनी को फिर स्नेह से, दे रक्षा आश्वासन,
पर्व भाई और बहन का, होता है मनभावन।।

55. चित्रगुप्त पूजन

16.11.2020

लेखक को लिखने की कला, देते हैं भगवान,
कार्तिक शुक्ल की द्वितीया को ऐसा विधान।
इसी दिन होता है सुनो, चित्रगुप्त का पूजन,
लेखनी, कलम, दावत का, साथ करेंगे पूजन।।
कायस्थों में त्योहार था, पर अब करते सारे,
लिखने पढने में लगे, जितने सज्जन प्यारे।
बहन के घर जा पूजन का, इसमें है विधान,
ज्ञान मिलेगा पूजन से, इच्छित फल वरदान।।

मिट जाए अज्ञान-तम, फैले ज्ञान प्रकाश,
और फैलता विश्व में, बुद्धि, श्रद्धा, विश्वास।
चित्रगुप्त भगवान को, अर्पण है श्रद्धा सुमन,
शेखर की है याचना, कर जोर, हृदय से नमन।।

56. भोरिया अर्क

20.11.2020

सझिया अर्घ्य पे घाट निहार,
छठ का बाहर मने त्योहार,
डाला, दाउड़ा शाम ले गया,
वापस घर लाया सरकार।

आधी रात, दो बजा निहार,

स्फुर्त हुए, फिर शुद्ध अपार,
नहा के सारे चले ले के फिर,
घाट पे सबकुछ दिया पसार।

आज घाट पर है तकरार,
तो घर में जल कुंड तैयार,
पूजन तो वैसा ही होता,
पर्व में श्रद्धा अपरम्पार।

पीपा सिन्दूर मांग में डार,
नाक पे इसकी बहती धार,
सिन्दूर से समृद्धि आए,
यही दिखाता हर परिवार।

ऊषाकाल में दूध की धार,
अर्क उठा सूरज को डार,
पारन कर संपन्न हुआ ये
छठ पर्व के दिन थे चार।

छठ पर मेरी यही गुहार,
मइया मेरी सुने पुकार,
काम किसी के आ पाऊं
इतना कर देना उपकार।

57. ठेकुआ की मांग

20.11.2020

छठ पे मेरी ये फरियाद,

ठेकुआ की आई है याद,
मांग रहा हूं, फिर से मेरी,
यही तो होती है फरियाद।

घाट की महिमा पर संवाद,
जल में देते अर्घ्य के बाद,
ठेकुआ मिलते थे इतने कि
पेट का मेरा भरता नाद।

ना ठेकुए की कोई मियाद,
खाता था इसपर हो संवाद,
मांग मांग कर जमा किया,
छठ मइया से मैं फौलाद।

हे मइया! अब ये फरियाद,

ठेकुआ का हो वृक्ष आजाद,

तोड़ तोड़ कर खाता रहता,

बचपन से मेरी यही मुराद।

58. छठ मइया की जयकार

20.11 2020

छठ पे पानी की बौझार,

पाकर सोचेंगे यही बहार,

संध्या पूजन पे मइया का,

आशीर्वाद मिला इस बार।

कृपा बरसती अपरम्पार,

हर दुख से होता उद्धार,
श्रद्धा भक्ति निष्ठा रखता,
प्रगत हो रहा है संसार।

दिल से मेरे उठी पुकार,
मइया से सबको उपहार,
धन, औलाद मिलेगा ऐसे,
जो भी इच्छित, मिले अपार।

व्रती की सेवा, पुण्य प्रकार,
डाला, दाउड़ा घाट पे डार,
मइया के चरणों में अर्पित,
दिल से करना जयजयकार।

59. छठ पर्व

20.11.2020

छठ पर्व का पावन त्योहार,
षष्ठी तिथि का किया आभार,
कार्तिक शुक्ल पक्ष में आया,
सूरज का पूजन करो विचार।

चार दिनों की अलग बहार,
नहा खाए से शुरू त्योहार,
खरना कर फिर अर्ध्य दिया,
भोरिया अर्क किया शुमार ।

व्रती का रहना चरण पखार,

आशीष उनका पाओ कुमार,
व्रती में छठी मैया को देखो,
ऐसी ही सब ओर पुकार।

पावन रखिए मन घर बार,
दउड़ा सूप की लगी कतार,
नारियल नींबू केला चढ़ता,
बनता ठेकुआ और कसार।

शेखर की कर जोर गुहार,
प्रसाद मिले तो हो उद्धार,
याचक हूं बचपन से मांगा,
मैंनें ठेकुआ और कसार।

60. देवोत्थान

25.11.2020

आषाढी एकादशी, शुक्ल पक्ष का ज्ञान,
सोने को पालक गए, जय विष्णु भगवान,
चार मास चालू रहा, शुभ पे है व्यवधान,
कार्य मांगलिक रोक है, रखिएगा संज्ञान।
पहले सोते अनवरत, जय विष्णु भगवान,
पालन करना विश्व का, कठिनाई में जान,
लक्ष्मी जी ने राय दी, जग में बने विधान,
चार मास हर वर्ष में, सोना बेहतर मान।
कार्तिक की एकादशी, शुक्ल पक्ष की शान,
आज सुनें संसार की, अब जाग्रत भगवान,
तुलसी संग विवाह का, करना है प्रावधान,

शालीग्राम के रूप में, स्थापित हों भगवान।
शादी, गृह प्रवेश का, मंगल शुरू अभियान,
अब प्रभु तो चैतन्य हैं, जग की बने हैं जान,
भक्त गणों को दे रहे, भगवन इच्छित वरदान,
मना रहे, कर जोर खड़े, ये पर्व है देवोत्थान।

61. संविधान दिवस

26.11.2020

आज दिवस है संविधान का,
अवसर है उस ग्रंथ गान का,
आज से सत्तर वर्षों पहले,
बना था सूचक देश मान का ।
प्रजातंत्र संपूर्ण ज्ञान का,

आजादी के अभियान का,
विस्तृत और लिखित ऐसा ये
संवर्धन हो अभिमान का ।
न्याय व्यवस्था के विधान का,
और व्यवस्थापिका प्राण का,
जनता सत्ता का निर्देशन
समता के अधिकार गान का ।
ये है परचम देश ध्यान का,
आजादी गणतंत्र प्राण का,
कृत संकल्प को दोहरा लो,
आज दिवस है संविधान का ।

62. देव दीवाली

30.11.2020

देव दीवाली आ गई आज,
कार्तिक मनभावन अंदाज,
आज पूर्णिमा का आगाज,
गंगा आरती करे समाज।
त्रिपुरासुर से त्रस्त समाज,
त्रिपुरारी की गिरी थी गाज,
काशी जा तब देव समाज,
मिल छेड़ा दीवाली साज।
वही दिवस आया है आज,
गुरू पर्व का पुण्य अंदाज,
कष्ट मुक्त उन्मुक्त मिजाज,

देव दीवाली मनेगी आज।

पुष्पों की शोभा अंदाज,

मंगल ध्वनि की हो आवाज,

मन में सबकी ये आगाज,

देव नमन का छेड़ो साज।

दिन पावन ये सुने समाज,

इच्छित फल पाने के राज,

नमन देव का करे समाज,

जो चाहोगे मिलेगा आज।

लेखक परिचय

डॉ हिमांशु शेखर, वैज्ञानिक जी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के आयुध और समाघात अभियांत्रिकी महानिदेशालय में निदेशक (परियोजना अनुवीक्षण) है|

Dr Himanshu Shekhar, Sc 'G', is Director (Project Monitoring) at the office of Director General (Armament and Combat Engineering) of DRDO.

Academic Achievements (शैक्षणिक उपलब्धियां)
Mechanical Engineering (यांत्रिकी अभियांत्रिकी) में Ph.D.
IIT, Kanpur M.Tech में CPI = 10.00
GATE 91 Score : 99.57 percentile
First class first (85.13%) with distinction in Graduation
First class (80.00%) with distinction in Intermediate
Merit scholarship during Inter, Graduation and M.Tech

Publications (प्रकाशन)
Technical Books : 20 in English, 17 in Hindi
Journal Articles : 65, Conference publications: 59
Invited talks: 92, हिंदी में तकनीकी आलेख: 89

Awards and Recognitions (पुरस्कार और पहचान)
साहित्यकार संसद से 2003 आचार्य रामनरेश त्रिपाठी शिखर साहित्य सम्मान
DRDO से 2010 में 'राकेट रहस्य' पुस्तक के लिए राजभाषा पुस्तक पुरस्कार
Agni Award for Excellence in Self-Reliance 2001
Young Scientist Award 2004
Mr Engineers – 2003 from Institution of Engineers (India)
National Science Day Oration Award – 2003
Editorial Board of Central European Journal of Energetic Materials and Bioglobia
Science day awards, Technology day awards, Safety day awards, हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कार आदि

Professional Competence
Rocket propulsion, Gun propulsion, Pyrotechnics, Explosive Science, Ballistic Prediction, Structural Integrity analysis, Modeling and Simulation of Armament Systems, Mathematical tool development, ...

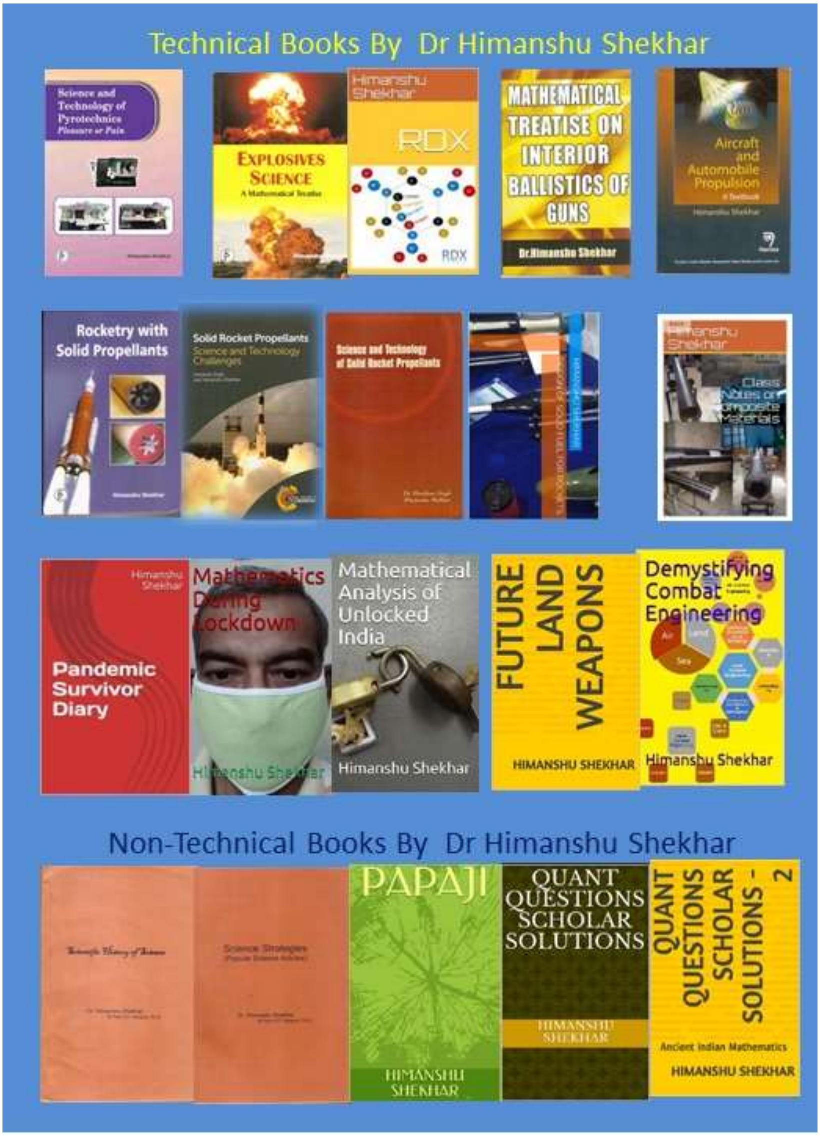
Technical Books By Dr Himanshu Shekhar
Science and Technology of Pyrotechnics Pleasure or Pain
Explosives Science
A Mathematical Treatise
Himanshu Shekhar
RDX
Mathematical Treatise on Interior Ballistics of Guns
Dr.Himanshu Shekhar
Aircraft and Automobile Propulsion
Rocketry with Solid Propellants
Solid Rocket Propellants
Science and Technology Challenges
Science and Technology of Solid Rocket Propellants
Himanshu Shekhar
Class Notes on Composite Materials
Himanshu Shekhar
Pandemic Survivor Diary
Mathematics During Lockdown
Mathematical Analysis of Unlocked India
Himanshu Shekhar
FUTURE LAND WEAPONS
HIMANSHU SHEKHAR
Demystifying Combat Engineering
Himanshu Shekhar
Non-Technical Books By Dr Himanshu Shekhar
PAPAJI
HIMANSHU SHEKHAR
QUANT QUESTIONS SCHOLAR SOLUTIONS
HIMANSHU SHEKHAR
QUANT QUESTIONS SCHOLAR SOLUTIONS - 2
Ancient Indian Mathematics
HIMANSHU SHEKHAR